

प्रेम के माता-पिता

जब मैं प्रथम बार लन्दन आई तो लोग मुझसे पूछा करते थे कि क्या मैं विवाहित हूँ और क्या मेरे कोई बच्चे हैं? मैं कह देती – “जी हाँ, मेरा एक पति है जो मुझे बहुत अधिक प्यार करता है। वह मेरे साथ बहुत अच्छा बर्ताव करता है। उसने मुझे इस छल-कपट वाले संसार से मुक्ति दिलाई है। उसने मुझे अपना बनाया है। वह मुझे इतना अपार प्यार करता है कि यदि मेरे दिल में कोई ऐसी वस्तु है, जो दर्द का कारण बनती है तो वह उसे मेरे दिल से मिटा देता है और इसीलिए मैंने उसका नाम रखा है – दिलाराम अर्थात् जो मेरे दिल को आराम देता है और मेरे दो बच्चे हैं – धीरज तथा शान्ति। इसीलिए मेरा जीवन बहुत आनन्दमय है। जब मुझ में धीरज व शान्ति है तो मैं प्यार का अत्यधिक आदान-प्रदान कर सकती हूँ। जहाँ न तो धीरज है और न ही शान्ति, वहाँ प्यार भी नहीं होता। प्रेम के माता-पिता भी शान्ति व धीरज हैं। यदि मुझ में धीरज है तो दूसरों के लिए मेरा प्रेम जल्दी व आसानी से कभी नहीं टूटेगा।”

इच्छाएं

इच्छाएं कोई समस्या नहीं हैं

पर इच्छाओं की पूर्ति करना समस्या है।

परमात्मा कहते हैं – तुम मुझे अपनी सभी इच्छाएं बता दो और मैं उनको निश्चित रूप से पूर्ण कर दूँगा। परन्तु लोग ऐसा नहीं करते।

अपनी इच्छाओं को पूर्ण करवाने की आशा में वे दूसरे लोगों का सहारा लेते हैं। आशाएं भी एक प्रकार की इच्छाएं ही हैं। प्रशंसा पाने, मान्यता मिलने या स्वीकृति पाने की आशा तो आध्यात्मिक प्राप्ति के चिह्न Sign हैं। कुछ समय के बाद यह आपकी अवनति का कारण बन जाएगा और आपको दूसरों की सच्ची दुआएं भी नहीं मिलेंगी।

*परमात्मा की शुद्ध इच्छा यही है कि हम उसके समान बनें
और अब हमारी एकमात्र इच्छा भी यही होनी चाहिए।*

ज्ञान

यदि मैं एक सच्ची ज्ञानी आत्मा हूँ तो मैं आध्यात्मिक बातों में भी निपुण बनूँगी। मैं अपने अध्यात्म-स्वरूप पर एकाग्र होने में सफल रहूँगी। मैं अपने अतीत के प्रभावों से भी मुक्त हो जाऊँगी। मेरे अन्तःकरण में केवल शान्ति व खुशी भरी होगी।

सच्चा ज्ञान केवल बौद्धिक समझ का ही प्रश्न नहीं है, यह तो मेरे जीवन में धारण करने के लिए है, ताकि इसमें सुधार आए। मेरे हर विचार, शब्द और कर्म का ब्रह्माण्ड के नियमों के साथ सहज रूप से समन्वय हो जाता है। पहले कभी जो ग़लती हुई भी थी, वह ठीक होने लग जाती है।

यह “ज्ञान” मेरी रक्षा करता है क्योंकि इससे दूसरों को देखने या उनके बारे में सोचने का मेरा दृष्टिकोण संकीर्ण नहीं बन पाता। यह मुझे सामर्थ्य प्रदान करता है जिससे मैं प्रेम तो सबसे करती हूँ परन्तु दूसरों के अनेक मामलों में दखलंदाजी करके अपनी शक्ति का हास भी नहीं करती।

जिन्होंने स्वयं को गहराई से समझ लिया है, उनका यही कर्तव्य है।

बौद्धिक दम्भ इस बात की निशानी है कि मैं सच्ची ज्ञानी नहीं बन पायी हूँ। सच्चा ज्ञान मुझे जीवन के माधुर्य के सम्पर्क में ले आता है और उसी तरह मुझे भी मधुर बना देता है।

सर्वशक्तियान ईश्वर

परमात्मा को सर्वशक्तिवान के रूप में क्यों जाना जाता है? इसलिए, क्योंकि उनके पास सर्व शक्तियाँ हैं जिन्हें वे हम बच्चों को उत्तराधिकार के रूप में देते हैं।

वे हमारे अन्तर्मन में शक्ति भरकर अपनी ओर आकर्षित करते हैं ताकि हम सत्यता के सभी पहलुओं का अनुभव कर सकें। परमात्मा की शक्ति के द्वारा हमारे मन स्वच्छ व तरोताजा बन जाते हैं। यह उनकी शक्ति ही है जो हमें हदों से पार ले जाकर दिव्य अनुभूतियाँ कराती है।

जब हम स्वयं पर व संसार पर दृष्टिपात करते हैं तो हम पाते हैं कि सकारात्मक परिवर्तन की ओर उठने वाला प्रत्येक कदम इस दैवी उपहार का प्रमाण है।

ईश्वर के साथ मेरा सम्बन्ध प्रकट होता है—

मेरे चरित्र से, सम्बन्धों से और

जीवन के प्रति मेरे सामान्य दृष्टिकोण से।

जब मैं स्वयं को अकेली या कमजोर महसूस करती हूँ तो इसका अर्थ है कि मैं ईश्वरीय शक्ति को अपने लिये कार्य नहीं करने दे रही। यदि मैं न तो सहयोग कर सकती और न ही प्रेमपूर्ण भावनाएँ रख सकती तो इसका अर्थ भी यही है कि मैं ईश्वरीय प्रेम का अनुभव नहीं कर रही हूँ। तो मैं अपना उत्तराधिकार प्राप्त करना अभी से क्यों न शुरू कर दूँ?

आचार-नीति

नीतिशास्त्र एक आचार-संहिता है जो आचरण व चरित्र को उन्नत करती है। मेरे व्यक्तिगत, सामाजिक व व्यवसायिक जीवन में आचार-नीति की आवश्यकता है। नीति-परायण होने का अर्थ है – स्वयं के लिए एक आचार-संहिता बनाए रखना।

व्यक्तिगत आचार-संहिता तभी बनाकर रखी जा सकती है जब हमारी बुद्धि छोटी-छोटी बातों में विचलित न हो। इसी कारण से आत्म-संयम रखना लाभप्रद है। आत्म-संयम प्रत्येक वस्तु को सही, सुन्दर, दिव्य और सरल बना देता है।

जिस व्यक्ति में अच्छा आत्म-अनुशासन है, उसके साथ अच्छे सम्बन्ध बनाना आसान होता है।

पहली नीति व आचार-संहिता है उदार-हृदय बनना। यदि आपका हृदय उदार नहीं है तो दुःख मिलता है – आप न तो मन-वाँछित कार्य कर सकते हैं और न ही स्पष्ट रूप से कह सकते। आप दूसरों को सहयोग भी नहीं दे सकते। आप स्वयं में शक्ति की कमी महसूस करेंगे और जब देंगे तो यह सावधानी बरतेंगे कि कितना दिया जाय। एक उदार-दिल होने का अर्थ धन-दान करने से नहीं है किन्तु यह एक ऐसी मानसिक स्थिति है जिसमें आप प्रत्येक व्यक्ति को समान समझकर व्यवहार करते हों।

ईमानदारी

जो व्यक्ति विश्व-सेवा के निमित्त बनना चाहता है उसमें ईमानदारी से काम करने का गुण अवश्य होना चाहिए। ईमानदारी चरित्र को उच्च बनाती है और आन्तरिक शक्ति प्रदान करती है। यह शुद्ध दृष्टिकोण को प्रकट करती है। ईमानदार व्यक्ति अपने आप में उच्च पद पर तथा अति आदर के पात्र होते हुए भी अति विनम्र रहते हैं। जिन लोगों की संगति में वे होते हैं उनके अनुसार वे अपने चरित्र या गुणों को नहीं बदल लेते। उनमें आत्म-गौरव होता है।

ईमानदारी से कार्य करते रहने से आत्मा शक्तिशाली बन जाती है। इससे बुद्धि स्वच्छ होती है और यह सत्य के साथ असत्य को नहीं मिलाती। ईमानदार व्यक्ति अपने बुद्धिमत्तापूर्ण शब्दों से सच्चाई प्रकट करने में समर्थ होता है। उन्हें सच्चाई को सिद्ध करने की आवश्यकता महसूस नहीं होती। क्योंकि एक स्वच्छ अन्तःकरण ऐसी ईमानदारी का इनाम है अतः ईमानदार व्यक्ति प्रत्येक कार्य के परिणाम को समझता है और बिना सोचे- समझे हर किसी वस्तु के प्रति आकर्षित नहीं होता।

आध्यात्मिक शिक्षा

आध्यात्मिक शिक्षा हमें सिखाती है कि मन को तनाव व उतार-चढ़ावों से मुक्त कैसे रखा जाय। जब आप स्वयं को परिस्थितियों द्वारा प्रभावित होने देते हो तो उसका परिणाम होता है मन की चंचलता। आध्यात्मिक ज्ञान से आप एकाग्रता प्राप्त करते हैं तथा सुरक्षित रहते हैं। आपकी खुशी में वृद्धि होती जाती है और आप दूसरों की खुशी बढ़ाने में भी सहयोगी बनते हैं।

यह संसार, दुःख का बड़ा बाज़ार है। यहाँ कुछ मत खरीदिए। एक अच्छी आध्यात्मिक शिक्षा आपको समझदारी से खरीददारी करना सिखाती है। संसार के लोगों से केवल खुशी स्वीकार कीजिए। अतः ईमानदार होने का महत्त्व समझिए।

असन्तुष्टि

सर्वप्रथम यह समझिए कि असन्तुष्टि क्या है। असन्तुष्टि का कारण है निरन्तर बढ़ती इच्छाएं। एक इच्छा दूसरी इच्छा को जन्म देती है और इससे आप कभी भी सन्तुष्टि महसूस नहीं करेंगे।

इच्छाएं फ़न्दों के समान हैं।

अनन्त इच्छाओं के कारण परस्पर सम्बन्ध अत्यन्त क्षणभंगुर हो गए हैं। अत्यन्त चिड़चिड़ापन व क्रोध जो सामान्यतः दृष्टिगोचर होता है वह या तो वस्तुओं व व्यक्तियों के प्रति स्वार्थयुक्त लगाव से उत्पन्न होता है अथवा स्वयं की एक विशेष प्रतिष्ठा के प्रति लगाव से उत्पन्न अहंकार से पैदा होता है। जहाँ असन्तुष्टि होती है वहाँ दिल कभी भी शान्त नहीं हो सकता, क्योंकि व्यर्थ व नकारात्मक विचार-शान्ति को नष्ट कर देते हैं।

सन्तुष्टि तो आध्यात्मिक चेतना का फल है जिससे नकारात्मकता समाप्त होती है। यह आपकी चिन्तन शैली को बदल देती है। जैसे ही आप अपनी विराट अन्तः शक्तियों को सचेत करेंगे, आपकी सारी इच्छाएं पूर्ण हो जाएंगी व आप फिर से शान्ति को प्राप्त कर सकेंगे।

बीमारी को समझना

बीमारी के प्रति आध्यात्मिक दृष्टिकोण का अर्थ यह है कि हम रोग को स्वयं के ही पूर्व कर्मों का परिणाम समझें। बीमारी कर्मों की गति के कारण आती है। कर्मों की गति यह बतलाती है कि आपकी जो स्थिति आज है वह कल किए गए कर्मों का परिणाम है। ये कर्म निकट अतीत में या काफी समय पहले किये गए हो सकते हैं। यदि आप इस प्रकार की ज़िम्मेवारी स्वीकार कर सकते हो और आपका दिल ईश्वर की याद में रहना जानता है तो आप ऐसी शक्ति प्राप्त कर लेंगे कि बड़ी-से-बड़ी शारीरिक बीमारी भी आपकी सहनशक्ति को प्रभावित नहीं कर सकेगी। पहाड़ भी राई बन जाएगा। यथार्थ ज्ञान न हो तो ठीक इसके विपरीत हो जाता है और छोटी सी शारीरिक पीड़ा भी बहुत बड़ी बीमारी महसूस होती है।

आध्यात्मिक बोध आपको कार्य सम्पादन करना सिखाता है ताकि आपके सुखद भविष्य की गारंटी मिल सके। इससे आप सुकर्म करने के महत्त्व को समझ जाते हैं क्योंकि सुकर्मों से ही अच्छा भविष्य बनता है। उदाहरणार्थ यदि आप अपने तन, मन और धन को मानवता की सेवा में लगाते हो तो स्वयं में अत्यन्त सूक्ष्म ऊर्जा व शक्ति भर सकते हो। दूसरी ओर, यदि इनका नकारात्मक प्रयोग किया जाता है तो परिणाम विपरीत होता है अर्थात् ऊर्जा व शक्ति का हास होता है!

सीखना

कुछ चीज़ें ज्ञानवर्द्धन करती हैं तथा अन्य चीज़ें ज्ञान को नष्ट करती हैं।
अहंकार इसे नष्ट कर डालता है।

“मुझे यह पहले ही मालूम है” –

यदि यह विचार मन में आया तो ज्ञान प्राप्त होना बंद हो जायेगा। लाखों चीज़ों के बारे में जानते हुए भी आप किसी वस्तु की गहराई में नहीं पहुँच सकते। जब तक आप किसी वस्तु की गहराई में नहीं पहुँच जाते, तब तक आप वस्तुतः परिवर्तित नहीं हो सकते।

जब ज्ञान मिलना बंद हो जाता है तो परिवर्तन भी नहीं होता। फिर आगे उन्नति भी नहीं होती है और आत्मा, जिसका कार्य सीखना व परिवर्तन करना है, का हास होने लगता है।

“इसका मुझे इतना तो ज्ञान है, किन्तु कल मैं इसे और इच्छी तरह समझ लूंगी।” – ऐसा चिन्तन करना भविष्य में और अधिक ज्ञान-प्राप्ति को सुनिश्चित करने का अच्छा तरीका है।

ज्ञान-प्राप्ति की चाह रखने वाले व्यक्तियों को सदा ही सीखने का अवसर मिल जाता है।

इस तरह सीखिए कि नई चीज़ों को ग्रहण करके जीवन में अपनाया जा सके। इसे कहते हैं समझदार होना, जो कि ज्ञान प्राप्ति का लक्ष्य है।

सफलता

सफलता का अर्थ है विचारों का ऐसे स्तर तक पहुँचना जिससे शुद्ध कर्म सहज ही हों। शुद्ध कर्म अच्छे बीज के समान हैं जो बो देने के बाद स्वास्थ्यप्रद व मीठे फल देते हैं। “जैसा तुम करोगे, वैसा भरोगे।”

यदि मैं आज अपने कर्मों की गुणवत्ता के प्रति सचेत रहती हूँ तो इससे मेरे कल की सफलता सुनिश्चित हो जाती है। इसमें गुण ही मुख्य आधार हैं क्योंकि इस प्रकार की सफलता के लिए “आशा” की ज़रूरत होती है और आज के युग में आशा के लिए साहस की आवश्यकता है। यह आपके दृढ़ विश्वास की शक्ति के साथ कार्य करने की बात है, जो एक प्रकार की आध्यात्मिक ईमानदारी है। अपने इन गुणों का सन्तुलन बनाए रखो और तब आपका पथ आसान हो जायेगा। आप केवल आगे बढ़ते रहोगे और आपको अवश्य सफलता मिलेगी।

सिर्फ हिम्मत से भी सफलता नहीं मिलती। यदि केवल हिम्मत है तो उससे अहंकार आ जाएगा। हिम्मत के साथ जब परमात्मा की मदद दिलाने वाली ईमानदारी भी जुड़ जाती है तो इससे ही आपको सफलता की गारण्टी मिलती है।

“मेरे द्वारा इस कार्य को भगवान करा रहा है।”

“मैं तो इस कार्य में सिर्फ एक माध्यम हूँ।” –

ऐसे विनम्र विचार रखने से ही खुदा की मदद व सुरक्षा प्राप्त होती है। इस प्रकार की ईमानदारी व साहस के परिणामस्वरूप विनम्रता आती है। जिसमें उत्साह, हिम्मत, ईमानदारी और विनम्रता है, उसका जीवन प्रेरणाप्रद होता है।

यह दूसरों को सफल बनाने में उनकी मदद करने की एक विधि भी है।

विचार-शक्ति

हम अपने विचारों के माध्यम से या तो शक्ति प्राप्त करते हैं या इसे नष्ट करते हैं। शुद्ध विचार करने से शक्ति पैदा होती है और अशुद्ध विचार करने से यह नष्ट होती है।

शुद्ध विचार वे हैं जो हमारे आध्यात्मिक व्यक्तित्व को अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। शेष सारे विचार अशुद्ध हैं। इन विचारों का हमारी सत्यता से कोई सरोकार नहीं होता। विचार ही वह माध्यम है जो हमारी अध्यात्म-शून्यता की स्थिति से हमें आत्म-सत्यता की ओर ले जाता है।

आध्यात्मिक ज्ञान एक छलनी के समान है जिसके द्वारा हम असत्यता को छानकर अलग कर सकते हैं। अपने विचारों को निरन्तर इस छलनी में से गुजारते रहने से हम आश्वस्त हो सकते हैं कि हम सही दिशा में बढ़ रहे हैं या नहीं। जब विचारों को कर्म में परिणत किया जाता है तो उन्हें तुरन्त देखा जा सकता है। जब मन को गुणों से भर लिया जाता है तो ये गुण हमारे कर्मों में प्रकट होंगे। अपने विचारों को उदार बनाने का परिणाम यह होता है कि हम वस्तुतः स्वयं को पवित्र बना सकते हैं और दूसरों को भी पवित्र बनने के लिए प्रेरित करते हैं।

खुद हमारा जीवन ही उनको बदलने में प्रेरणाप्रद बन जायेगा। उनको कुछ कहने की आवश्यकता भी नहीं होगी। हमारे शुद्ध विचारों की तरंगें फैलकर समस्त विश्व में पहुँच सकती हैं। हमारा जीवन ही प्रकाश-स्तम्भ का कार्य कर सकता है।

सहनशीलता

सहनशीलता के तीन स्तर हैं : स्थिति को सतत प्रयत्नों के साथ सहन करना, आध्यात्मिक शक्ति का प्रयोग करते हुए स्वयं को परिस्थिति के अनुसार ढालकर उससे निपटना, परिस्थिति के ठीक बीच से होकर निकलना बिना यह ध्यान किये कि किसी चीज़ को सहन करने की ज़रूरत भी है।

सहनशीलता की कमी की निशानी है : जिस पल कोई व्यक्ति कुछ छोटी-सी बात कह देता है तो आप शिकायत करने या चिल्लाने लगते हैं। इतना संवेदनशील होना ठीक नहीं लगता। फिर भी, बिल्कुल संवेदना-शून्य होना भी ठीक नहीं है! दूसरे लोग जो कह रहे हैं उसे प्यार से समझो। आप जो कहते हैं उसके बारे में दूसरे कैसा महसूस करते हैं – इसके प्रति संवेदनशील बनो।

कुछ लोग आश्चर्य करते हैं कि दूसरे उनकी बात का बुरा मान जाते हैं। ऐसे लोग दूसरों के प्रति कठोर शब्द प्रयोग करते हैं पर दूसरे उन्हें कुछ कहें – यह वे सहन नहीं कर सकते।

सहनशीलता की कमी से अधैर्य उत्पन्न होता है जो वातावरण में आध्यात्मिकता व प्रेम के गुण को कम कर देता है!

“मुझे इस तरह कब तक सहन करते रहना है?”

यदि ऐसा विचार किया तो यह सहनशीलता को शक्ति रूप में प्रयोग करना नहीं है। याद रखिए! आप जीवन रूपी रंगमंच पर एक अभिनेता हो! कदम पीछे न करो! अनासक्ति के भाव से अपना पार्ट अदा करो।

अपने आध्यात्मिक पुरुषार्थ में दृढ़ रहिए और सहज ही अगले स्तर की ओर बढ़ जाइए।

अक्षीम की ओर गमन

वर्तमान समय तुम्हें जो प्रयत्न करने की आवश्यकता है वह है परमात्मा के निकट आने का प्रयत्न। इसके अनुभव के लिए तुम्हें सीमित-चेतना (देह अभिमान) से परे रहने का अभ्यास करने की आवश्यकता तब तक है जब तक कि अन्ततः तुम निरन्तर बेहद आध्यात्मिक-चेतना (देही-अभिमान) में न रहने लगे। मानव द्वारा इस स्थिति को प्राप्ति करना अत्यन्त कठिन कार्य है क्योंकि हमने अनेक शरीर धारण किये हैं और हमारे बहुत से सम्बन्ध बने हैं। शरीर में रहते हुए और मानव-सम्बन्धों को निभाते हुए भी हम न्यारे बने रह सकते हैं परन्तु यह तभी सम्भव है जब परमात्मा के साथ हमारा सम्बन्ध जुटे।

परमात्मा के साथ ऐसा सम्बन्ध बनाने के लिए आपको अन्य सब आसक्तियों को छोड़ना पड़ेगा। तथापि उन आसक्ति रूपी बन्धनों को प्यार से काटना है। परमात्मा से मदद लो और अपने बंधनों को स्वयं काटना सीखो।

खुशी

खुशी से बढ़कर दूसरी खुराक नहीं है।

(यह तो एक आयुर्वर्द्धक रसायन है)

दुःख के समान कोई बीमारी नहीं है।

(यह ज़हर के समान है)

काफी लम्बे समय से दुःखी रहने के कारण आत्मा अब शान्ति के लिए उत्कंठित है।

जब तक आत्मा शान्ति प्राप्त नहीं कर लेती, तब तक वास्तविक खुशी नहीं मिल सकती।

ऐसी गहन आन्तरिक शान्ति, जो परमात्मा के मिलन से प्राप्त होती है, इतनी अधिक शक्ति देती है कि आप दुःखों के बारे में बिल्कुल भूल जाते हैं। दिल में केवल कृतज्ञता व अपार खुशी रहती है।

सच्ची खुशी का अनुभव दुःखों की पीड़ा को हर लेता है।

यह इलाज केवल आपके जीवन में ही खुशी व आनन्द भरने के लिए नहीं है बल्कि इस संसार में भी खुशी व आनन्द भरने के लिए है।

एक हर्षित चेहरा प्रत्येक वस्तु को श्रेष्ठ बनाने में काफी योगदान करता है।

ईश्वर का आशीर्वाद

जब आप यह समझते हो कि आप भगवान के हो तब आपका ज़िम्मेवार स्वयं भगवान हो जाता है। वह आपकी देख-रेख करता है।

जब खुदा के लिए प्यार बढ़ता है तो आपके अन्दर आध्यात्मिक बोध का झरना फूट पड़ता है। आप में बहुत शक्ति भर जाती है और आप अनुभव करते हो कि “ऐसा कुछ भी नहीं है जो मैं नहीं कर सकता।”

परमात्मा जैसे ही आपके प्यार व विश्वास को देखते हैं, वे बदले में और ज्यादा प्यार व विश्वास भर देते हैं और आप अनुभव करते हैं कि – “मेरा जीवन ईश्वर के हाथों में है।”

परमात्मा का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए वे जो कुछ आपको दे रहे हैं सिर्फ उसे याद रखिए।

इस बात का अपने हृदय में बोध रखें व ज़िम्मेवार बनें। परमात्मा का आशीर्वाद केवल उन्हें मिलता है जो ईमानदार हैं।

सेवाधारी के रूप में महिलायें

जिस समुदाय में मेरा लालन-पालन हुआ वहाँ महिलाओं द्वारा घर से बाहर की कोई भूमिका निभाए जाने के विचार का कड़ा विरोध किया जाता था। यह काफी समय पहले की बात है और अब काफी बदलाव आ चुका है। परन्तु मैंने यह परिवर्तन आने तक प्रतीक्षा नहीं की थी। मेरे अन्दर मानवता के उत्थान हेतु कार्य करने की तीव्र इच्छा थी और यही काम करने के लिए मैं निकल पड़ी।

मुझे ऐसा करने की हिम्मत इसलिए मिली क्योंकि मुझे अपनी आध्यात्मिक पहचान बिल्कुल स्पष्ट थी। सच तो यह है कि मैं न पुरुष हूँ और न ही नारी। मैं तो एक आत्मा हूँ, ईश्वर की बच्ची हूँ और इस समय नारी के शरीर में भृकुटि के मध्य विराजमान हूँ। मैं अपने लक्ष्य के बारे में भी बिल्कुल स्पष्ट थी और इस बारे में भी चिन्तन करती रहती थी कि दूसरों की ज़्यादा से ज़्यादा सेवा कैसे की जाय। इस संसार ने अपनी समस्याओं के समाधान हेतु कभी महिलाओं का आधार नहीं लिया। इसके बजाय यह संसार इस कार्य के लिए उच्च पदाधिकारियों, विद्वानों व धनी लोगों की ओर मुड़ा है। यह एक बहुत बड़ी भूल रही है। माँ की भूमिका है बच्चों को बड़े प्यार से जगाना और उनको सारे दिन के लिए तैयार करना। वह बच्चों का सम्बल है। वह उन्हें पालती है। आमतौर पर घर तथा बच्चों के प्रति मोह ही स्त्रियों को उनके कर्तव्य पालन से रोकता है। इस मोह से ऊपर उठना कोई छोटी उपलब्धि नहीं है। समाज क्या कहेगा—इस डर से परे जाना भी कम बात नहीं है। परमात्मा के प्रति मेरे सम्बन्ध ने मुझे ऐसी आन्तरिक शक्ति प्रदान की जिससे समाज के रीति-रिवाज मुझे रोक न सके क्योंकि तीव्र उत्साह था। अतः सभी बाहरी दबावों व प्रभावों का सामना कर लिया।

शान्ति स्थापित करना

विश्व में शान्ति स्थापित करने में सहयोग देने के लिए आप कुछ तो कर सकते हैं और वह है स्वयं को शान्त-स्वरूप बनाना। इसके लिए पहले तो आपको अपना वास्तविक आत्मान्वेषण करने का शौक होना चाहिए कि कौन-सी चीज़ ने मुझे अशान्त किया है। अपने मन को अन्दर की ओर मोड़ने पर आप पाएंगे कि दैनिक जीवन की भावनाओं की अनेक परतों के नीचे आपके रूहानी हित का शान्तिकुण्ड स्थित है। आवश्यकता इस बात की है कि आप बार-बार उसी भाग का अन्वेषण करें, न केवल इसे समझने के लिए परन्तु बार-बार इसका अनुभव करने के लिए। यह एक अति सन्तोषजनक अनुभव है जो आत्मा को ताजगी प्रदान कर शान्ति से भर देता है। इस सुविधाजनक स्थिति में रहकर यह पहचान करना आसान हो जाता है कि कौन-से विचार व भावनाएं आत्मा का विनाश करने वाली हैं।

आत्मानुभूति की शक्ति मन की विनाशकारी आदतों को बदलने का चमत्कार कर देगी। आप अपनी अशान्ति के लिए दूसरों को दोष देना छोड़ देंगे और सत्य-प्राप्ति के अभ्यास में जुट जाएंगे।

शान्ति बहुत-सी चीज़ों से मिलकर बनती है, जैसे प्रेम, धैर्य, बुद्धिमत्ता आदि। आपको थोड़ी-सी ही शान्ति से सन्तुष्ट नहीं हो जाना है, परन्तु स्वयं को इससे भरपूर करना है। जब आप दूसरों के साथ व्यवहार करते हुए इसका अभ्यास करेंगे तो आपका स्वभाव शान्त बन जाएगा। यह आदत न केवल आपको लाभ देगी परन्तु आपके आस-पास वालों को भी लाभ पहुँचायेगी। इस प्रकार आप विश्व-परिवर्तन में सहयोगी बनते हैं। केवल शान्त रहना ही पर्याप्त नहीं। आपको अपने मन-वचन व कर्मों से शान्ति की तरंगें फैलानी हैं तथा शान्त वातावरण का निर्माण करना है।

ईश्वर कौन है ?

दिल ईश्वर का दर्शन करता है

सन् 1937 के आसपास जब मैं इस संस्था के सम्पर्क में आई तो मुझे पहले-पहले जो अनुभव हुए उनमें एक अनुभव यह था कि मेरा बुद्धियोग बिजली के करंट के समान ईश्वर से जुट जाता था। परमात्मा की ओर से मुझ में सीधा प्रवाहित होने वाला यह विद्युत-प्रवाह ही था। यह अनुभव अत्यन्त आनन्ददायक था। इस अनुभव से मुझमें ईश्वर के प्रति समर्पित होने की इच्छा जागी। बाद में मुझे यह महसूस होने लगा मानो ईश्वर ने स्वयं मेरा हाथ थाम लिया हो और वही मुझे आगे बढ़ा रहे हों। आज भी मुझे ऐसा ही लगता है। मैं निरन्तर उनके साथ का अनुभव करती हूँ और मुझे महसूस होता है कि उनकी दुआओं का हाथ सदा मेरे सिर पर है।

यह मेरा अनुभव है कि आप परमात्मा को इन भौतिक चक्षुओं से देख नहीं सकते और उसे हृद की, स्थूल बुद्धि से समझ नहीं सकते। फिर भी परमात्मा को पहचानने की आवश्यकता है, जो कि 'देख लेने' मात्र से या दार्शनिक समझ से कहीं ज्यादा बोध प्रदान करने वाली है। परमात्मा की "पहचान" मस्तिष्क उस हृद तक नहीं कर सकता जिस हृद तक दिल कर सकता है। जब दिल ईश्वर को "देख लेता है", उसे "जान लेता है" तभी पहचान हो सकती है। अतः पहचान होती है भावनाओं से, अनुभवों से और दिल की समझ से।

ईश्वर कौन है ?

परमात्मा को पहचानना

सबसे पहली बात, जिसे जानना और समझना है – यह है कि ईश्वर एक है। वह अद्वितीय है, उसके सिवाय किसी और को परमात्मा नहीं कहा जा सकता। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि हम मनुष्यात्माएं केवल मानव हैं और मनुष्यों के साथ ही महा-परिवर्तन होना है। पुराणों में वर्णित देव-देवियाँ तथा पूर्व दिशा के देशों की प्रतिमाएं व देव-मूर्तियाँ पूज्य, श्रेष्ठ प्राणी थे। लेकिन उनको इतना श्रेष्ठ किसने बनाया? जरूर भगवान ने बनाया।

इन चीजों की समझ ने मुझे भगवान को पहचानने में मदद की। इस संस्था में आने से पहले मैं भगवान में भक्ति-भाव से आस्था रखती थी। इसका अर्थ है कि यद्यपि मुझे परमात्मा में विश्वास था लेकिन परमात्मा कौन है—इसके बारे में मुझे असली व दिल छू लेने वाला अनुभव नहीं था।

अब मेरा दिल कहता है –

“मैंने परमात्मा को देखा है, मैंने परमात्मा को जाना है, मैंने परमात्मा को दिल से पहचाना है।”